इमामे हसन असकरी (अ0)

की हयात और उनके कारहाए नुमायाँ पर एक नज़र

इमादुल उलमा अल्लामा सै0 अली मुहम्मद नक़वी साहब क़िब्ला
अनुवादक – मोहतरमा बिन्ते ज़हरा नक़वी साहेबा

दसवें इमाम हज़रत अली नक़ी (अ0) के लायक़ बेटे हज़रत इमाम हसन असकरी (अ0) की पैदाईश मुबारक 10 रबीउस्सानी 232 हि0 को मदीना मुनव्वरा में हुई। आपका मुबारक नाम "हसन" और कुन्नियत "अबुमुहम्मद" थी चूँकि आपकी ज़िन्दगी का ज़ियादा हिस्सा सामरा के क़रीब "असकर" नामी लश्करगाह में क़ैदी की हैसियत से बसर हुआ इसलिए आप असकरी के लक़ब से मश्हूर हुए।

इमाम (अ0) की ज़िन्दगी के शुरु के ग्यारह साल वालिदे बुज़ुर्ग के साथ मदीने में गुज़रे। उसके बाद हुकूमत ने इमाम नक़ी (अ0) को मदीना छोड़ने पर और इराक़ जाने पर मजबूर किया।

चुनानचे इमाम हसन असकरी (अ0) भी अपने बुज़ुर्ग बाप के साथ तमाम सख़्तियाँ बर्दाश्त करते हुए सामरा पहुँचे। सामरा में इमाम अली नक़ी (अ0) जिस जगह क़ैद थे इमामे हसन असकरी भी वहीं आपके साथ थे। इमाम (अ0) ने तमाम हक़ाएक़ व मआरिफ अपने आली क़दर बाप से हासिल किए। 254 हि0 में इमाम अली नक़ी (अ0) की शहादत के बाद 22 साल की उम्र में इमामत के मन्सब पर फाएज़ हुए। इमाम अली नक़ी ने अपनी शहादत से छः महीने पहले अपने असहाब व रिश्तेदारों के बीच आपकी इमामत का एलान फरमा दिया था।

इमाम हसन असकरी (अ0) के ज़माने के सियासी हालात

जब इमाम (अ0) ने इमामत की ज़िम्मेदारी संभाली उस वक़्त अब्बासी ख़लीफा मुअ्तज़बिल्लाह साहेबे एक़्तेदार था। मुअ्तज़ के हटाए जाने के बाद मुह्तदी बिल्लाह ने ग्यारह महीने हुकूमत की फिर वह भी मुअ्तमिद के ज़रिए हटा दिया गया। अगरचे यह ज़माना वह था कि जब अब्बासी हुकूमत अन्दुरूनी कशमकश और गिरोहबन्दी की सख़्तियाँ झेल रही थी। फिर भी यह सारे गिरोह हक़ीक़ी इस्लाम और उसके सच्चे रहनुमाओं के ख़िलाफ एक थे। इमामे रिज़ा (अ0) की शहादत के बाद हुकूमत ने मज़हबे हक़्क़ा की इमामों पर सख़्त निगरानी और ग़ैर मामूली सख़्तियाँ शुरु कर दी थी। यह निगरानी और सख़्ती ग्यारहवें इमाम पर कई गुना ज़ियादा थीं। और यह इसी बिना पर थी कि उस दौर में रसूलुल्लाह (स0) की यह हदीस लोगों की ज़ुबान पर थी कि:– "ग्यारहवें इमाम का बेटा ज़ालिम हुकूमत का ख़ात्मा कर देगा। और दुनिया में हक़ व अदालत का निज़ाम क़ाएम करेगा।" यही वजह थी कि हुकूमत की लगाम जिसके हाथों में भी होती थी वह इमामे हसन असकरी (अ0) को क़ैदाख़ाने में रखता था। अब्बासी हुकमरान जानते थे कि मुसलमानों के हक़ीक़ी रहबर और पैग़म्बर के हक़ीक़ी जानशीन यही अईम्मा हज़रात हैं।

इमामे हसन असकरी (अ0) बरहक़ जानशीनों की ग्यारहवीं कड़ी हैं कि जिनके बाद ही महदी मौऊद का ज़माना शुरु होता है इसी बुनियाद पर लोग ग्यारहवें इमाम को एक लम्हा के लिए भी आज़ाद छोड़ने और निगरानी में कमी करने पर तैयार नहीं थे और मुस्तक़िल हज़रत को लश्करगाह (असकर) में रखते थे। सिर्फ जब हुकूमत वाले बदलते थे तो उस दौरान मामूली सी आज़ादी (वह भी सख़्त निगरानी में) हासिल होती थी। जैसे ही नया हाकिम हुकूमत की बागडोर अपने हाथ में ले लेता था, हज़रत को दोबारा

क़ैद कर लिया जाता था। मुअ्‌तमिद के ज़माने में इमाम (अ0) और उनके शीओं पर ज़ुल्म व सितम और निगरानी अपने शबाब पर थी बावजूद इतने बिगड़े हुए हालात और मुसीबातें के इमाम हमेशा फराएज़े हिदायत व इमामत अन्जाम देते रहे। जिस वक़्त इमाम असकरी (अ0) क़ैद में थे उस वक़्त उम्मत और इमाम के बीच ताल्लुक़ के लिए नुमाइन्दे लगे हुए थे लेकिन उन पर भी हर वक़्त हुकूमत की भरपूर नज़र रहती थी और कभी–कभी तो इन मामलों की नुमाइन्दगी को अन्जाम देने के लिए नुमाइन्दों को सियासी और समाजी काम भी अन्जाम देने पड़ते थे जैसे जनाबे उस्मान बिन सईद और उनके फ़रज़न्द अबूजाफर मुहम्मद बिन उस्मान जो इमाम के ख़ास नुमाइन्दे थे उन्होंने बग़दाद में दुकान खोली ताकि उनसे मिलने वालों पर हुकूमत शक में न पड़े यह उन मुख़्तलिफ क़िस्म की हिक्मते अमली और काम करने के तरीक़ों में से एक नमूना है जो एख़्तियार किया गया। इस तरह उमवी और अब्बासी हुकूमत के सख़्ती भरे माहोल में नुमाइन्दों ने मासूम इमामों की हिदायत में पयामे हक़ के चिराग़ को रौशन रखा। और जो मुस्तक़िल फ़राएज़ अन्जाम दिये हैं उनमें शीओं के सियासी मुआमलात में रहनुमाई, इज्तेमाई मसाएल में रहबरी, खुम्स की वसूली, मआरिफे इस्लामी की इशाअत और इमाम व उम्मत के बीच ताल्लुक़ व जोड़ का अहम रोल अदा करना है।

मआरिफे इस्लामी के फैलाने में इमाम (अ0) का किरदार

अगरचे इमामे हसन असकरी (अ0) ने सिर्फ 28 साल की उम्र पाई मगर फिर भी मआरिफे इस्लामी की तबलीग़ व तरसील में बहुत बड़ा किरदार अदा किया। एक तरफ तो बड़े–बड़े नामवर शार्गिद तैयार किये और दूसरी तरफ जबकि यूनान, हिन्दुस्तान और क़दीम ईरान की ग़लत सोंच और ख़यालात इस्लामी समाज में फैल रहे थे। इमाम (अ0) पिछले मासूम इमामों की तरह इस फिर जाने वाले और गुमराही भरे अक़ीदों और ख़यालों के मुक़ाबले में खड़े हुए और बड़ी समझदारी वाले अन्दाज़ में हक़ीक़ी इस्लाम की हिफाज़त फरमाई।

''इस्हाक़ कन्दी'' क़ुर्आन के तज़ाद के बारे में किताब लिख रहा था। इमाम (अ0) को यह ख़बर मिली तो आप ठीक वक़्त का इन्तिज़ार करने लगे। एक दिन ''कन्दी'' के कुछ शार्गिद इमाम (अ0) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत ने उन लोगों से फरमाया कि क्या तुम में से कोई ऐसा है जो अपने उस्ताद को इस बकवास कोशिश से अलग रख सके? इसके बाद इस सिलसिले में कुछ उमदा और बारीक बातें भी इरशाद फरमाईं। जब ''कन्दी'' के शार्गिदों ने वह बातें उस्ताद की ख़िदमत में पेश कीं तो वह हैरान रह गया। उसने पूछा कि उन नुकात को कौन सामने लाया है? आख़िरकार उन सब ने क़बूल किया कि हमें यह बातें ''अबु मुहम्मद'' ने सिखाई हैं। फिर ''कन्दी'' ने भी क़बूल कर ही लिया कि सिवाए ख़ानदाने रिसालत के कोई भी इन गुमराहियों को रोक नहीं सकता था। फिर उसने क़ुर्आन के ख़िलाफ अपनी तमाम किताबों को आग में जला दिया। यह वाक़ेआ इमाम आली मक़ाम (अ0) के इल्मी व फिक्री कोशिशों का एक बेहतरीन नमूना है।

हदीस के ज़ख़ीरों में बहुत सी हदीसें इमाम हसन असकरी से नक़ल हुई हैं उनमें से पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की मशहूर तरीन हदीस यह है कि ''शराबी, शिर्क करने वाले और बुत की पूजा करने वाले की तरह है।''

इस रवायत को इमामे हसन असकरी ही के ज़रिए इब्ने जौज़ी ने ''तहरीमुल ख़म्र'' में और अबुनईम फ़ज़ल बिन वक़ीन ने नक़ल करने के बाद लिखा है कि यह हदीस सही है इसलिए कि अहलेबैते रसूल (अ0) के वास्ते से आई है।

सम्आनी ''किताबुल अबसार'' में लिखता है कि ''अबु मुहम्मद अहमद बिन इब्राहीम बिन हाशिम तूसी बलाज़री हाफ़िज़ वाअिज़ ने इस हदीस को इमाम अबु मुहम्मद हसन बिन अली बिन मुहम्मद बिन अली बिन मुसार्रिज़ा से सुना है।''

इमाम (अ0) के कुछ मशहूर शार्गिद

1– अबुहाशिम दाऊद बिन क़ासिम जाफरी, जो

इमाम के नव्वाब और नुमाइन्दों में से एक थे और उन्होंने चार इमामों का ज़माना देखा है।

2– दाऊद बिन अबी ज़ैद नीशापूरी।

3– अबु ताहिर मुहम्मद बिन अली बिन हिलाल।

4– अबु अब्बास बिन जाफर हुमैज़ी कुम्मी, जो अपने ज़माने के बुज़ुर्ग उलमा में से थे। इनकी अहम किताब ''क़रबुल अस्नाद'' है जो किताबे काफी का ख़ास माख़ज़ है।

5– मुहम्मद बिन अहमद बिन जाफर कुम्मी, आप भी इमाम (अ0) के नाएबों में से थे।

6– जाफर बिन सुहैल सैक़ल।

7– मुहम्मद बिन हसन सफर कुम्मी, आप अपने दौर के पहली सफ के उलमा में शुमार होते थे और बहुत सी किताबों के लेखक थे उनमें से ''बसाएरुद्दरजात'' मशहूर है।

8– अबु जाफ़र हमानी बरमकी।

9– इब्राहीम बिन अबुहफ्ज़ अबु इस्हाक़ कातिब।

10– इब्राहीम बिन महेरयार, साहेबे ''किताबुल बशारात''।

11– अहमद बिन इब्राहीम बिन इस्माईल बिन दाऊद हमदानी अलकातिब, अन्नदीम, अदब व फ़िक़्ह के बुज़ुर्ग उस्ताद थे।

12– अहमद बिन इस्हाक़ अलअश्अरी अबु अली अलकुम्मी, यह भी मुमताज़ उलमा में से थे इन्होंने कई किताबें लिखीं। जिनमें से एक किताब ''इललुस्सौम'' है।

यह कुछ नाम उन बुज़ुर्ग उलमा के हैं जिन्होंने ग्यारहवें इमाम की बारगाह से फाएदा हासिल किया। और इस्लामी उलूम के फैलाव व बढ़ोत्तरी और हक़ीक़ी इस्लाम की तालीम और मज़हबी समाज की फिक्री रहनुमाई के लिए कोशिशें की हैं। इमामे हसन असकरी (अ0) ने कुर्आने मजीद का भी सबक़ दिया। जिसकी बुनियाद पर ''अबु अली हसन बिन ख़ालिद बिन मुहम्मद बिन अली बर्क़ी'' ने एक ऐसी तफ़सीर लिखी जो एक सौ बीस (120) हिस्सों में थी।

अफसोस कि आज यह किताब मौजूद नहीं है। लेकिन बहुत सी रवायतें जो कुर्आने मजीद की आयतों की तफसीर में मोतबर इस्लामी किताबों में पाई जाती हैं इसी किताब से लिखी गई हैं।

''तोहफुल उक़ूल'' में इस्हाक़ बिन इस्माईल अलअश्अरी के नाम इमाम (अ0) का एक तफसीली रिसाला है जिसमें इमाम (अ0) के छाटे–छोटे कलेमात भी लिखे हैं। इन इल्मी व फ़िक्री कारनामों के अलावा सियासी मैदान में भी इमाम (अ0) ने मिसाली कारनामे अन्जाम दिये हैं और हमेशा इस्लामी ख़यालात फैलाने के लिए लगे रहे। और यही वजह थी कि इमाम (अ0) को अपनी क़ैद में रखते हुए भी अब्बासी हुक्मरान इतना डरते थे कि इमाम (अ0) की जान के पीछे पड़ गए इसकी वजह यह है कि हक़ीक़त ज़ंजीरों में जकड़ी हुई भी हो बातिल के वजूद के लिए एक बड़ा ख़तरा होती है। बातिल परस्तों का यह उसूल है कि वह हक़ीक़त के सितारे को डुबाने के लिए कोशिश करते हैं लेकिन अगर एक सितारा डूबता है तो उसकी जगह पर दूसरा निकल कर अंधेरों के पुजारियों को मुक़ाबले की दावत देता है और एक शमअ् से कई शम्अें रौशन होती चली जाती हैं। इसी तरह इमामे हसन असकरी (अ0) हक़ फैलाने वालों में के ग्यारहवें बड़े पेश्वा 260 हि0 में अब्बासी ख़लीफा मुअ्तमिद की साज़िशों के तहत धोके से ज़हर देकर शहीद हुए। और अपनी जगह बातिल को तोड़ने वाले और इन्साफ क़ाएम करने वाले इमामे महदी (अ0) को छोड़ गए ताकि सुन्नत के मुताबिक़ हक़ परस्तों की रवायत को ज़िन्दा रखें और आख़िरकार एक दिन बातिल की बिसात को उलट कर दज्जाली ताक़तों का ख़ात्मा करके अद्ल व इन्साफ से दुनिया को भर दें।

''अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मद (स0) व आले मुहम्मद (अ0)''

□□□